

संपर्क सरिता

वर्ष-27 | अंक 2 | अप्रैल - जून 2026



संस्थान में 62वां स्थापना दिवस: स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का अनावरण
“शिक्षक ही एनईपी के वाहक हैं” श्री इंदर सिंह परमार



"भारतीय ज्ञान परंपरा-आनंदशाला" कार्यक्रम का आयोजन

भारतीय संस्कारों को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने की आवश्यकता : डॉ. भरत शरण सिंह



मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा 'लोकमाता अहिल्याबाई' पुस्तक का विमोचन

शोध सम्मेलन का उद्देश्य लोकमाता अहिल्याबाई के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समकालीन राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में पुनर्मूल्यांकन करते हुए उनके प्रशासनिक कौशल, सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक पुनर्जागरण तथा राष्ट्रनिर्माण संबंधी योगदान पर गंभीर अकादमिक विमर्श को प्रोत्साहित करना था।



संस्थान और SAC, ISRO अहमदाबाद के बीच एमओयू

यह साझेदारी तकनीकी शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में दोनों संस्थानों के बीच दीर्घकालिक सहयोग का आधार बनेगी तथा सेमीकंडक्टर प्रौद्योगिकी में देश की क्षमताओं को नई दिशा प्रदान करेगी।

पत्रिका संपादक-मंडल

निदेशक

प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी

संपादक

प्रो. पी.के. पुरोहित

सह-संपादक

श्रीमती बबली चतुर्वेदी

डिज़ाइन

श्री जितेन्द्र चतुर्वेदी

छायांकन

श्री रितेन्द्र पवार



Deemed to be University under
Distinct Category

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (NITTTR), भोपाल
(समविश्वविद्यालय, विशिष्ट श्रेणी अंतर्गत), शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
शामला हिल्स, भोपाल 462002, (म.प्र.) भारत

सोशल मीडिया लिंक: x.com/nitttrbpl

facebook.com/nitttrbhopalofficial

instagram.com/nitttrbhopal

www.nitttrbpl.ac.in



संस्थान में 62वां स्थापना दिवस: स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का अनावरण

“शिक्षक ही एनईपी के वाहक हैं” श्री इंदर सिंह परमार



संस्थान के 62वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय आध्यात्मिक चिंतन, तकनीकी शिक्षा, नवाचार, कौशल विकास तथा विकसित भारत-2047 के संकल्प को केंद्र में रखते हुए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। समारोह के प्रथम दिवस की मुख्य अतिथि पद्मश्री से सम्मानित डॉ. निवेदिता भिड़े, अखिल भारतीय उपाध्यक्ष, विवेकानंद केंद्र, कन्याकुमारी ने संस्थान परिसर में स्थापित स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का अनावरण किया। इस अवसर पर उन्होंने स्वामी विवेकानंद के संकल्प, संघर्ष एवं भारतीय आध्यात्मिक परंपरा के वैश्विक प्रसार पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मानवता के समग्र विकास का आधार ‘एकात्म’ का सिद्धांत है तथा वेदांत दर्शन को व्यावहारिक जीवन में अपनाना आज की आवश्यकता है। उन्होंने युवाओं से स्वामी विवेकानंद के विचारों को आत्मसात कर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। विशिष्ट अतिथि स्वामी नित्यज्ञानानंद महाराज, सचिव, रामकृष्ण मिशन आश्रम, भोपाल ने कहा कि स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा किसी व्यक्ति विशेष का नहीं, बल्कि त्याग, सेवा और राष्ट्रसमर्पण की भावना का प्रतीक है। वहीं सीएसआईआर-एम्पी के निदेशक डॉ. थल्लाडा भास्कर ने संस्थान की उपलब्धियों की सराहना की।

समारोह के दूसरे दिवस के मुख्य अतिथि मध्यप्रदेश शासन के उच्च शिक्षा, आयुष एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार ने संस्थान द्वारा विकसित 11 इमर्जिंग टेक्नोलॉजी आधारित मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स (MOOCs) का औपचारिक शुभारंभ किया। साथ ही संस्थान का प्रशिक्षण कैलेंडर भी विमोचित किया गया, जिसमें मध्यप्रदेश उच्च शिक्षा विभाग के लिए सर्वाधिक प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं।

उन्होंने कहा कि एनआईटीटीटीआर भोपाल ने सतत प्रयासों, गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण एवं नवाचार के माध्यम से देश में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। राज्य शासन राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रभावी क्रियान्वयन तथा शिक्षक प्रशिक्षण को सुदृढ़ बनाने के लिए संस्थान के साथ पूर्ण सहयोग हेतु प्रतिबद्ध है। शिक्षक ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति के वास्तविक वाहक हैं और उनकी क्षमता संवर्धन से ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित की जा सकती है। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव, उच्च शिक्षा विभाग, श्री अनुपम राजन (आईएस) ने संस्थान की अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सराहना करते हुए कहा कि उच्च शिक्षा विभाग एनआईटीटीटीआर भोपाल के साथ मिलकर शिक्षकों को विषयगत दक्षता के साथ-साथ प्रयोगात्मक एवं प्रयोगशाला कौशल से भी सशक्त बनाने की दिशा में कार्य करेगा।

मुख्य वक्ताओं में प्रो. गोबर्धन दास ने भारत की ऐतिहासिक विरासत का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत केवल विकासशील राष्ट्र नहीं, बल्कि पुनः विश्व नेतृत्व की ओर अग्रसर राष्ट्र है। युवा पीढ़ी, वरिष्ठ पीढ़ी के मार्गदर्शन एवं सहयोग से भारत को पुनः ‘विश्वगुरु’ के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। वहीं प्रो. खेमसिंह डेहरिया ने संस्थान द्वारा विकसित MOOCs की सराहना करते हुए कहा कि ये पाठ्यक्रम देशभर के विश्वविद्यालयों एवं तकनीकी संस्थानों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगे तथा उद्योग-शिक्षा सहयोग को भी नई दिशा प्रदान करेंगे।

संस्थान के निदेशक प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि भारत संतों, ऋषियों और महान आध्यात्मिक परंपराओं का देश है। तकनीकी शिक्षा तभी सार्थक होगी जब उसमें नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक दृष्टि और भारतीय ज्ञान परंपरा का समन्वय हो।



संस्थान में 62वां स्थापना दिवस: स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का अनावरण

“शिक्षक ही एनईपी के वाहक हैं” श्री इंदर सिंह परमार



उन्होंने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों से स्वामी विवेकानंद के विचारों को जीवन में अपनाने का आह्वान करते हुए कहा कि संस्थान आगामी शैक्षणिक सत्र से भारतीय ज्ञान परंपरा में बी.एस.-एम.एस. (BS-MS) कार्यक्रम प्रारंभ करने की दिशा में कार्य कर रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान समय में लगभग 85 प्रतिशत रोजगार कौशल आधारित हैं, इसलिए अनुभवात्मक शिक्षा, व्यावहारिक प्रशिक्षण तथा MOOCs के माध्यम से सतत अधिगम को बढ़ावा देना समय की आवश्यकता है।

कार्यक्रम के दौरान प्रो. संजय अग्रवाल ने संस्थान की 62 वर्षों की गौरवशाली विकास यात्रा, प्रमुख उपलब्धियों तथा भावी योजनाओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया।

समारोह में संस्थान की उपलब्धियों और विकास यात्रा पर आधारित एक लघु फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया। प्रथम दिवस कार्यक्रम का संचालन श्रीमती शोभा लेखवानी ने तथा द्वितीय दिवस के कार्यक्रम का संचालन श्रीमती अनीता लाला ने किया। स्थापना दिवस समारोह के अंतर्गत स्वामी विवेकानंद विषयक निबंध प्रतियोगिता, संकाय सदस्यों एवं अधिकारियों द्वारा वृक्षारोपण अभियान तथा कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। समारोह में भोपाल के विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों के कुलपति, निदेशक, शिक्षाविद्, उद्योग प्रतिनिधि, संस्थान के वर्तमान एवं सेवानिवृत्त संकाय सदस्य, कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।



मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा 'लोकमाता अहिल्याबाई' पुस्तक का विमोचन

लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जयंती के उपलक्ष्य में गत वर्ष संस्थान में "लोकमाता अहिल्याबाई : राष्ट्र पुनरुत्थान की संकल्पना" विषय पर अखिल भारतीय शोध सम्मेलन का आयोजन किया गया था।



शोध सम्मेलन में प्रस्तुत चयनित शोधपत्रों का संकलन "लोकमाता अहिल्याबाई" शीर्षक से पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ है जिसे मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित किया गया तथा लोकार्पण मध्यप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के करकमलों द्वारा किया गया।

शोध सम्मेलन का उद्देश्य लोकमाता अहिल्याबाई के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समकालीन राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में पुनर्मूल्यांकन करते हुए उनके प्रशासनिक कौशल, सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक पुनर्जागरण तथा राष्ट्रनिर्माण संबंधी योगदान पर गंभीर अकादमिक विमर्श को प्रोत्साहित करना था। देशभर के विश्वविद्यालयों, उच्च शिक्षण संस्थानों एवं शोध संस्थाओं से प्राप्त शोधपत्रों में से गुणवत्ता, मौलिकता एवं विषय की प्रासंगिकता के आधार पर 125 से अधिक शोधपत्रों का चयन किया गया। सम्मेलन में विद्वानों ने न्यायप्रियता एवं प्रशासनिक दक्षता, पंच परिवर्तन से

लोककल्याण, सांस्कृतिक पुनर्निर्माण द्वारा राष्ट्र जागरण, नारी स्वाभिमान एवं समाज उत्थान तथा सामाजिक कुरीतियों की चुनौतियों और उनके समाधान जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर अपने शोध प्रस्तुत किए।

इन चयनित शोधपत्रों को संपादित एवं संकलित कर 19 अध्यायों वाली पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है। यह पुस्तक लोकमाता अहिल्याबाई के दूरदर्शी नेतृत्व, लोककल्याणकारी शासन, सांस्कृतिक संरक्षण, महिला सशक्तिकरण तथा भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित उनके योगदान का प्रामाणिक अकादमिक दस्तावेज प्रस्तुत करती है। पुस्तक लोकार्पण समारोह में प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी, श्री अशोक कडेल, डॉ. रविन्द्र कान्हेरे, डॉ. खेमसिंह डेहरिया, डॉ. विजय मनोहर तिवारी, डॉ. अमिताभ सक्सेना, डॉ. सचिन तिवारी तथा स्वामी रामनारायण सहित अनेक शिक्षाविद् एवं विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे।

संस्थान में “भारतीय ज्ञान परंपरा” पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

शिक्षा समाज का विषय है, शासन का नहीं: श्री रविन्द्र कान्हेरे



संस्थान द्वारा मध्यप्रदेश शासन के उच्च शिक्षा विभाग के शिक्षकों एवं ग्रंथपालों के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा विषयक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल सिद्धांतों, सांस्कृतिक विरासत, शिक्षा-दर्शन तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समकालीन शिक्षा व्यवस्था से जोड़ते हुए शिक्षकों को मूल्याधारित एवं समग्र शिक्षा की दिशा में प्रेरित करना था। इस व्याख्यान के मुख्य वक्ता श्री रविन्द्र कान्हेरे अध्यक्ष, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान एवं श्री निखिलेश माहेश्वरी, प्रांत संगठन मंत्री, विद्या भारती, मध्य भारत प्रांत भोपाल थे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री रविन्द्र कान्हेरे ने कहा कि भारतीय दृष्टि में शिक्षा केवल सूचना या कौशल अर्जित करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व निर्माण, चरित्र विकास, आत्मानुशासन तथा समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व का सशक्त माध्यम है। उन्होंने स्पष्ट किया कि भारतीय परंपरा में शिक्षा को सदैव समाज का विषय माना गया है, न कि केवल शासन का। समाज की सहभागिता, परिवार की भूमिका तथा गुरु-शिष्य परंपरा ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को विश्व में विशिष्ट पहचान प्रदान की है। भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता तथा अन्य शास्त्रीय ग्रंथों में निहित जीवन मूल्यों पर आधारित है। इन ग्रंथों में केवल आध्यात्मिक चिंतन ही नहीं, बल्कि जीवन प्रबंधन, सामाजिक समरसता, प्रकृति संरक्षण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा मानवीय मूल्यों का गहन दर्शन भी विद्यमान है। आज आवश्यकता इस बात की है कि इन शिक्षाओं को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समग्र दृष्टिकोण के साथ समाहित किया जाए, जिससे विद्यार्थियों का बौद्धिक, नैतिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक विकास एक साथ सुनिश्चित हो सके। उन्होंने पंच कोशीय शिक्षा और चार प्रकार के शिक्षार्थियों- “सुनने वाले, समझने वाले, प्रयोग करने वाले और प्रसारित करने वाले” के महत्व को भी रेखांकित किया।

श्री निखिलेश माहेश्वरी ने समापन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य की शिक्षा व्यवस्था के लिए भी एक सशक्त मार्गदर्शक है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को भारतीय संस्कृति, परंपरा, जीवन मूल्यों एवं शिक्षा दर्शन की गहराई से परिचित कराया है। साथ ही यह समझ विकसित की है कि आधुनिक शिक्षण पद्धतियों में भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों का प्रभावी समावेश किस प्रकार किया जा सकता है। उन्होंने शिक्षकों को प्रोत्साहित किया कि वे अपने शिक्षण कार्य में केवल विषयगत ज्ञान तक सीमित न रहें, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिकता, संवेदनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व, राष्ट्रभावना तथा मानवीय मूल्यों का भी विकास करें क्योंकि शिक्षक केवल ज्ञान का संवाहक नहीं, बल्कि समाज निर्माण का प्रमुख आधार होता है।

संस्थान निदेशक प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न अंग बनाने पर विशेष बल देती है। ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को भारतीय चिंतन की मूल अवधारणाओं से जोड़ने के साथ-साथ उन्हें मूल्याधारित, समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रेरित करते हैं। संस्थान भविष्य में भी भारतीय ज्ञान परंपरा, नवाचार, शिक्षक प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण से जुड़े ऐसे कार्यक्रमों का नियमित आयोजन करता रहेगा, ताकि उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षा का स्तर और अधिक सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाया जा सके। आईकेएस विभागाध्यक्ष प्रो. प्रमोद कुमार पुरोहित ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा को केवल अतीत का गौरव समझना पर्याप्त नहीं है। यह आज भी विज्ञान, प्रौद्योगिकी, मानविकी, पर्यावरण, स्वास्थ्य, प्रबंधन और सतत विकास जैसे विविध क्षेत्रों में मार्गदर्शन प्रदान करने की क्षमता रखती है। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक विज्ञान परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। यदि इन दोनों का समन्वय किया जाए तो शिक्षा अधिक मानवीय, व्यावहारिक और समाजोपयोगी बन सकती है।

संस्थान और SAC, ISRO अहमदाबाद के बीच एमओयू

संस्थान और स्पेस एप्लीकेशंस सेंटर (SAC), ISRO अहमदाबाद के बीच एडवांस सेमीकंडक्टर टेक्नोलॉजी और उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स रिसर्च में सहयोग को मजबूती देने के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर हुए।



संस्थान और स्पेस एप्लीकेशंस सेंटर (SAC), ISRO अहमदाबाद के बीच एडवांस सेमीकंडक्टर टेक्नोलॉजी और उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स रिसर्च में सहयोग को मजबूती देने के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर हुए। यह साझेदारी तकनीकी शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में दोनों संस्थानों के बीच दीर्घकालिक सहयोग का आधार बनेगी तथा सेमीकंडक्टर प्रौद्योगिकी में देश की क्षमताओं को नई दिशा प्रदान करेगी। समझौता ज्ञापन पर संस्थान निदेशक प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी तथा स्पेस एप्लीकेशंस सेंटर, इसरो, अहमदाबाद के निदेशक श्री सोम्या एस. सरकार ने हस्ताक्षर किए। समझौते के अंतर्गत दोनों संस्थान अनुसंधान परियोजनाओं, प्रयोगशाला अवसंरचना, तकनीकी विशेषज्ञता, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा ज्ञान-साझेदारी के माध्यम से सहयोग करेंगे। इससे न केवल अनुसंधान को नई गति मिलेगी, बल्कि उच्च शिक्षा संस्थानों, शिक्षकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों

को अत्याधुनिक तकनीकों पर कार्य करने का अवसर भी प्राप्त होगा। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी ने कहा कि यह समझौता भारत की तकनीकी आत्मनिर्भरता के संकल्प को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। आज विश्व में सेमीकंडक्टर प्रौद्योगिकी का महत्व निरंतर बढ़ रहा है और भारत भी इस क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व स्थापित करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसरो जैसे प्रतिष्ठित वैज्ञानिक संस्थान के साथ यह साझेदारी ज्ञान, अनुसंधान और नवाचार के नए आयाम स्थापित करेगी। इस सहयोग के माध्यम से युवा शोधकर्ताओं, शिक्षकों तथा तकनीकी विशेषज्ञों को उच्च गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण, अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं तक पहुँच तथा नवीन अनुसंधान परियोजनाओं में कार्य करने के अवसर प्राप्त होंगे। कार्यक्रम में प्रो. ए. एस. वालके, डॉ. पी. के. खन्ना, प्रो. निशित दुबे तथा डॉ. पल्लवी भटनागरसहित संस्थान के वरिष्ठ संकाय सदस्य एवं अधिकारी भी उपस्थित रहे।

"भारतीय ज्ञान परंपरा-आनंदशाला" कार्यक्रम का आयोजन

भारतीय संस्कारों को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने की आवश्यकता: डॉ. भरत शरण सिंह

‘श्रुति और स्मृति’ ने जीवित रखी भारतीय ज्ञान परंपरा: श्री पंकज नाफड़े



संस्थान में भारतीय ज्ञान परंपरा विभाग (IKS) एवं भारतीय शिक्षण मंडल द्वारा "भारतीय ज्ञान परंपरा-आनंदशाला" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल स्वरूप, उसके दार्शनिक आधार तथा आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में उसकी प्रासंगिकता पर गंभीर विमर्श करना था। इसमें विभिन्न राज्यों से आए शिक्षकों, शिक्षाविदों एवं शिक्षण मंडल के पदाधिकारियों ने सहभागिता करते हुए भारतीय शिक्षा-दर्शन, सांस्कृतिक चेतना और मूल्याधारित शिक्षा पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय महामंत्री, भारतीय शिक्षण मंडल डॉ. भरत शरण सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से भारत को केवल “रिफ्रेश” ही नहीं बल्कि “ट्रांसफॉर्म” होने की आवश्यकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा भारत के उन “मिसिंग कंपोनेंट्स” को पुनर्स्थापित एवं पुनर्जीवित करने की क्षमता रखती है, जो समय के साथ कमजोर हुए हैं। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि विदेशी मानसिकता से मुक्त होकर भारतीय संस्कारों, मूल्यों एवं चिंतन को वैश्विक स्तर पर स्थापित किया जाए। भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य के भारत की दिशा भी निर्धारित कर सकती है। बीज वक्ता के रूप में भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय संयुक्त महामंत्री श्री पंकज नाफड़े ने कहा कि “शिक्षा” केवल एक भौतिक ढांचा है, जबकि “विद्या” संस्कारों एवं जीवन मूल्यों का संचार करती है। भारत पर अनेक विदेशी आक्रमण हुए, किन्तु वे भारत के नैतिक संस्कारों एवं

सांस्कृतिक आधार को कभी नहीं तोड़ पाए। “श्रुति” एवं “स्मृति” की परंपरा ने भारतीय ज्ञान को पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवंत बनाए रखा। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार “एकात्म दृष्टि” है, जो मानव, प्रकृति एवं समाज के मध्य समन्वय स्थापित करती है। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए संस्थान निदेशक प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी ने कहा कि नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। भारतीय ज्ञान प्रणाली विद्यार्थियों को केवल रोजगारपरक शिक्षा ही नहीं देती, बल्कि उन्हें नैतिकता, आत्मविश्वास, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं मानवीय मूल्यों से भी जोड़ती है। तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा के साथ भारतीय चिंतन का समावेश समय की आवश्यकता है, जिससे भावी पीढ़ी वैश्विक प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ भारतीय संस्कृति से भी जुड़ी रहे। कार्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा विभागाध्यक्ष प्रो. प्रमोद कुमार पुरोहित ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल प्राचीन इतिहास का अध्ययन नहीं है, बल्कि यह विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा, प्रबंधन, स्वास्थ्य, पर्यावरण और सामाजिक जीवन के लिए आज भी समान रूप से प्रासंगिक है। यदि भारतीय ज्ञान के सिद्धांतों को समकालीन शोध और नवाचार के साथ जोड़ा जाए, तो शिक्षा अधिक प्रभावी, मूल्यपरक और समाजोपयोगी बन सकती है। इस कार्यक्रम में भारतीय शिक्षण मंडल के प्रांत अध्यक्ष डॉ. हरिहर बसंत गुप्ता, प्रांत मंत्री डॉ. मनीषा गगरे तथा विभिन्न राज्यों के शिक्षक उपस्थित थे।

संस्थान में सत्र 2026-27 से देश का प्रथम B.S.-M.S. पाठ्यक्रम प्रारम्भ

संस्थान का भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) विभाग अभिनव एवं शोध-उन्मुख एकीकृत पाठ्यक्रम शैक्षणिक सत्र 2026-27 से देश का पहला बी.एस.-एम.एस. (भारतीय ज्ञान परंपरा) कार्यक्रम प्रारंभ करने जा रहा है। इन दोनों कार्यक्रमों की विशेषता यह है कि इनमें भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल धारणाओं—जैसे विचार-पद्धति, जीवन-पद्धति, आचार-पद्धति एवं सांस्कृतिक चेतना—को केंद्र में रखते हुए आधुनिक विज्ञान, एआई (AI), डेटा एनालिटिक्स और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी एवं प्रौद्योगिकी के साथ समन्वय स्थापित किया गया है। यह समन्वय इस पाठ्यक्रम को एक विशिष्ट और नवाचार-आधारित शैक्षणिक मॉडल प्रदान करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा समय और युग की सीमाओं से परे जाकर सदैव सत्य, ज्ञान और मानव कल्याण के मूल उद्देश्यों के प्रति समर्पित रही है। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए यह 5 वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के अनुरूप विकसित किया गया है।

संस्थान निदेशक प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा हमारी सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत की आधारशिला है। यह कार्यक्रम छात्रों को केवल शैक्षणिक दक्षता ही नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों, सामाजिक संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व की भावना से भी जोड़ने का प्रयास है। हमारा उद्देश्य है कि विद्यार्थी इस कार्यक्रम के माध्यम से शोध एवं नवाचार के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करें और भारतीय ज्ञान प्रणाली की वैश्विक पहचान को और सुदृढ़ करें। अधिष्ठाता विज्ञान एवं भारतीय ज्ञान परंपरा विभागाध्यक्ष प्रो. प्रमोद कुमार पुरोहित ने कहा कि यह कार्यक्रम छात्रों को आधारभूत अवधारणाओं से लेकर उच्च स्तरीय शोध पद्धतियों तक एक सतत और क्रमिक शैक्षणिक विकास का अवसर प्रदान करेगा। इसमें छात्र-केंद्रित एवं परिणाम-आधारित शिक्षण प्रणाली, सामाजिक

National Institute of Technical Teachers' Training and Research (NITTTR), Bhopal
(Deemed to be University under District Category)
Ministry of Education, Government of India
Shamla Hills, Shanti Marg, Bhopal-462002, Madhya Pradesh

ADMISSION OPEN 2026-27

Bharatiya Gyan Parampara

Regular Students, In-Service Teachers, Working Professionals / Industry Personnel and Enthusiastic Learners.

BACHELOR OF SCIENCE (BS)

Eligibility:
10+2 or equivalent (recognized board) minimum 50% marks (relaxation applicable)
Admission Weightage:
Selection based on combined evaluation of CUET score (50%), 10+2 marks (30%), and interview (20%). Relaxation for reserved categories as per GoI norms. Total seats = 30.

MASTER OF SCIENCE (MS)

Eligibility:
Min. 3-year undergraduate degree – minimum 55% marks (relaxation applicable)
Admission Weightage:
Selection based on combined evaluation of undergraduate marks (60%), national examination score (GATE/CAT/CCMN/CUET) (10%), and interview (30%). Candidates not appearing in national eligibility tests (GATE/CAT/CCMN/CUET) are also eligible for admission. A minimum 3-year undergraduate degree from a recognized university with at least 55% marks is required.

FOR MORE INFORMATION
SCAN QR OR VISIT NOW
<https://nitttrbpl.ac.in/>

सुधार परियोजनाओं में इंटरनशिप तथा गुरुकुल आधारित अनुभवात्मक शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण घटक शामिल किए गए हैं। यह पाठ्यक्रम वैदिक गणित, प्राचीन धातुकर्म, स्थापत्य और आयुर्वेद जैसे समृद्ध आयामों को समकालीन शोध और नवाचार से जोड़कर विद्यार्थियों को वैश्विक चुनौतियों के व्यावहारिक समाधान खोजने के योग्य बनाएगा। उक्त पाठ्यक्रम हेतु अध्ययन मंडल की बैठक में डॉ. मुकेश मिश्रा, प्रो. मनोज सिंह, डॉ. मनोज कुमार कुर्मी, प्रो. अल्पना त्रिवेदी गिरि, प्रो. रामेन्द्र सिंह, डॉ. अमित कुमार दूबे और डॉ. सौमी चैटर्जी उपस्थित थे।



मिशन LiFE के संदेश को जन-जन तक पहुँचाएगी संस्थान की जागरूकता फिल्म



पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से संस्थान ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की पहल “मिशन LiFE (Lifestyle for Environment)” पर आधारित एक जागरूकता फिल्म का निर्माण किया है। यह फिल्म पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली को अपनाने तथा प्रकृति के प्रति व्यक्तिगत एवं सामूहिक उत्तरदायित्व का संदेश देती है। मिशन LiFE भारत के नेतृत्व में प्रारंभ किया गया एक वैश्विक जन-आंदोलन है, जो लोगों को संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग, सतत उपभोग और पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करता है। यह पहल ‘बिना सोचे-समझे और विनाशकारी उपभोग’ की आदतों को छोड़कर ‘पर्यावरण-सचेत और जिम्मेदार उपभोग’ को बढ़ावा देती है।

संस्थान निदेशक प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी ने कहा कि मिशन LiFE केवल पर्यावरण संरक्षण का अभियान नहीं, बल्कि जीवन जीने की ऐसी सोच है जो प्रकृति और मानव के बीच संतुलित संबंध स्थापित करती है। ऊर्जा की बचत, जल संरक्षण, प्लास्टिक का कम उपयोग और प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग जैसे छोटे-छोटे व्यक्तिगत प्रयास भी पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। यह फिल्म समाज में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने और सतत जीवनशैली को अपनाने के लिए लोगों को प्रेरित करेगी।

डीन कॉर्पोरेट एंड इंटरनेशनल रिलेशन्स प्रो. प्रमोद कुमार पुरोहित ने कहा कि संस्थान द्वारा निर्मित यह फिल्म मिशन LiFE के मूल संदेश को प्रभावी ढंग से जन-जन तक पहुँचाने का माध्यम बनेगी। फिल्म में दैनिक जीवन के सरल व्यवहारिक उपायों के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर अपनाई गई पर्यावरण-सचेत आदतें किस प्रकार सतत भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। ऐसी सोच है जो प्रकृति और मानव के बीच संतुलित संबंध स्थापित करती है। ऊर्जा की बचत, जल संरक्षण, प्लास्टिक का कम उपयोग और प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग जैसे छोटे-छोटे व्यक्तिगत प्रयास भी पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। यह फिल्म समाज में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने और सतत जीवनशैली को अपनाने के लिए लोगों को प्रेरित करेगी। डीन कॉर्पोरेट एंड इंटरनेशनल रिलेशन्स प्रो. प्रमोद कुमार पुरोहित ने कहा कि संस्थान द्वारा निर्मित यह फिल्म मिशन LiFE के मूल संदेश को प्रभावी ढंग से जन-जन तक पहुँचाने का माध्यम बनेगी। फिल्म में दैनिक जीवन के सरल व्यवहारिक उपायों के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर अपनाई गई पर्यावरण-सचेत आदतें किस प्रकार सतत भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्थान में मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (MPCST), भोपाल के सहयोग से पर्यावरण संरक्षण एवं पर्यावरणीय जागरूकता विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन और सतत विकास के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना था। कार्यक्रम के शैक्षणिक सत्र के अंतर्गत तीन विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान आयोजित किए गए, जिनमें मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. विजय भास्कर सेमवाल (MANIT, भोपाल),

डॉ. संदीप कौशिक (IGNTU, मध्य प्रदेश) तथा डॉ. पूजा गुप्ता (SGSITS, इंदौर) थे। विशेषज्ञों ने पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन तथा सतत विकास की आवश्यकता पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को जागरूक किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों की प्रतिभा को प्रोत्साहित करने हेतु क्विज (प्रश्नोत्तरी) एवं पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती वंदना त्रिपाठी, रजिस्ट्रार मेजर निशान्त कुमार तथा कार्यक्रम समन्वयक प्रो. नीरज राठौर उपस्थित थे। कार्यक्रम का मंच संचालन श्रीमती शोभा लेखवानी द्वारा किया गया।



एडवांस्ड डिजिटल प्रोडक्ट डिज़ाइन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान द्वारा हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) के अधिकारियों के लिए में उद्योगों की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप कौशल विकास और तकनीकी उन्नयन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से “कंप्यूटर एडेड डिज़ाइन (2D ड्रॉइंग एवं 3D मॉडलिंग) – आधुनिक सॉफ्टवेयर का उपयोग” विषय पर एक सप्ताह का विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिनांक 22 जून से 26 जून 2026 तक आयोजित इस प्रशिक्षण में एचएएल सहित विभिन्न प्रमुख औद्योगिक संस्थानों के इंजीनियरों ने सहभागिता की। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को आधुनिक उत्पाद डिज़ाइन, उन्नत 3D मॉडलिंग, इंजीनियरिंग ड्राफ्टिंग, असेंबली डिज़ाइन तथा औद्योगिक मानकों के अनुरूप कंप्यूटर एडेड डिज़ाइन (CAD) तकनीकों में दक्ष बनाना था।

प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को नवीनतम डिज़ाइन सॉफ्टवेयर एवं व्यावहारिक अनुप्रयोगों का अनुभव प्रदान किया गया, जिससे वे उद्योगों की बदलती तकनीकी आवश्यकताओं के अनुरूप अपने कौशल का विकास कर सकें। संस्थान निदेशक प्रो. चन्द्र चारू त्रिपाठी ने इस अवसर पर कहा कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम केवल तकनीकी कौशल संवर्धन का माध्यम नहीं हैं, बल्कि ये भारत की औद्योगिक आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी हैं। आज के तेजी से बदलते तकनीकी परिदृश्य में इंजीनियरों को केवल पारंपरिक ज्ञान तक सीमित न रहकर आधुनिक डिजिटल डिज़ाइन, सिमुलेशन और स्मार्ट मैनुफैक्चरिंग तकनीकों में दक्ष होना आवश्यक है। इस कार्यक्रम में श्री राजेश कुमार भारती व प्रो. रवि कुमार गुप्ता ने सहयोग प्रदान किया।



"भारतीय ज्ञान परंपरा" पर कार्यक्रम का आयोजन

भारतीय ज्ञान परंपरा आधुनिक शिक्षा को नैतिक आधार प्रदान करती है: श्री रवि कुमार



संस्थान में भारतीय ज्ञान परंपरा पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की समकालीन प्रासंगिकता तथा आधुनिक शिक्षा में उसके समावेश पर विचार-विमर्श करना था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रान्त संगठन मंत्री, विद्या भारती, राजस्थान, श्री रवि कुमार ने अपने उद्बोधन में कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न अंग बनाकर भारतीय चिंतन को पुनः स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। वर्तमान समय में विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों में भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित पाठ्यक्रम प्रारंभ किए जा रहे हैं, जिससे विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विरासत से परिचित होने का अवसर मिल रहा है। पंचतंत्र केवल नीति कथाओं का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन प्रबंधन, नेतृत्व, नैतिकता और व्यवहारिक ज्ञान का उत्कृष्ट स्रोत है। भारतीय ज्ञान परंपरा हमें प्रकृति के संसाधनों का सीमित, संतुलित एवं उत्तरदायी उपयोग करना सिखाती है, जो आज के पर्यावरणीय संकट के समाधान की दिशा भी प्रस्तुत करती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के तीव्र विकास के इस दौर में तकनीक के साथ नैतिकता का समन्वय अत्यंत आवश्यक है और यह नैतिक दृष्टि भारतीय ज्ञान परंपरा से ही प्राप्त हो सकती है।

उन्होंने कहा कि आधुनिक विज्ञान जिन अनेक सिद्धांतों और अवधारणाओं पर आज कार्य कर रहा है, उनके संकेत हमारे वेदों एवं पुराणों में विद्यमान हैं। आवश्यकता इस बात की है कि उन ज्ञान-स्रोतों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन, विश्लेषण एवं डिकोड किया जाए, जिससे मानवता के कल्याण के लिए उनका उपयोग सुनिश्चित हो सके। संस्थान निदेशक प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रभावी क्रियान्वयन में भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्वपूर्ण भूमिका है। तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा को भारतीय जीवन मूल्यों, सांस्कृतिक दृष्टिकोण और नैतिक आचरण से जोड़कर ही विद्यार्थियों का समग्र व्यक्तित्व विकास सुनिश्चित किया जा सकता है। संस्थान भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासरत है। इस कार्यक्रम के समन्वयक भारतीय ज्ञान परंपरा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रमोद कुमार पुरोहित ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक प्रासंगिक एवं वैज्ञानिक ज्ञान-संपदा है। कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रामेन्द्र सिंह द्वारा दिया गया तथा कार्यक्रम का संचालन डॉ. सोमी चैटर्जी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के शिक्षक उपस्थित थे।

“मास्टर ट्रेनिंग फॉर टीचर्स ऑफ साइंस” पर प्रशिक्षण

विज्ञान शिक्षा को केवल पाठ्यपुस्तकों और सैद्धांतिक अवधारणाओं तक सीमित रखने के बजाय उसे प्रयोग, अनुभव और खोज से जोड़ना आज की शैक्षणिक आवश्यकता है। विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, जिज्ञासा, तर्कशीलता और समस्या-समाधान की क्षमता विकसित करने में प्रयोगात्मक शिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विभाग द्वारा मध्यप्रदेश स्कूल शिक्षा विभाग के शिक्षकों के लिए ‘मास्टर ट्रेनिंग फॉर टीचर्स ऑफ साइंस’ विषय पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित की गई। दिनांक 28 मार्च से 26 अप्रैल 2026 के मध्य आयोजित इन 08 विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मध्यप्रदेश स्कूल शिक्षा विभाग के कुल 412 शिक्षकों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का व्यापक उद्देश्य विज्ञान शिक्षकों को आधुनिक, प्रभावी और अनुभव-आधारित शिक्षण पद्धतियों से परिचित कराते हुए उन्हें कक्षा-कक्ष में प्रयोगात्मक विज्ञान शिक्षा को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए सक्षम बनाना था। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को सक्रिय प्रायोगिक शिक्षण (Active Experim-

entation), विज्ञान प्रयोगों का परिचय (Introduction to Science Experiments), संसाधनों की पहचान (Identification of Resources), प्रलेखन (Documentation), सिमुलेशन और व्यावहारिक अनुभव (Simulation / Hands-on Experience) जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में दक्ष बनाना था। कार्यक्रम में प्रशिक्षकों को न केवल विज्ञान के प्रयोगात्मक पहलुओं की जानकारी दी गई, बल्कि उन्हें वास्तविक कक्षा परिदृश्य में इन प्रयोगों को लागू करने की रणनीतियों से भी अवगत कराया गया। इस कार्यक्रम के प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर अब आगे जाकर अन्य विज्ञान शिक्षकों को भी प्रशिक्षित करेंगे, जिससे यह प्रशिक्षण कार्यक्रम राज्य स्तर पर विज्ञान शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में एक प्रभावशाली भूमिका निभाएगा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. पी.के. पुरोहित थे व डॉ. हुसैन जीवाखान, डॉ. बशीरुल्लाह शेख, डॉ. सोमी चैटर्जी, डॉ. तबस्सुम जफर, डॉ. आकाश गायकवाड़ ने संकाय सदस्य के रूप व सुश्री निताशा ठाकुर ने योगदान दिया।



"कोर टीचिंग स्किल्स" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग विभाग द्वारा दिनांक 20 से 25 जुलाई 2026 तक "कोर टीचिंग स्किल्स" विषय पर पाँच दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी)-2020 तथा परिणाम-आधारित शिक्षा (Outcome Based Education-OBE) के सिद्धांतों के अनुरूप प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं, पाठ्यक्रम नियोजन तथा परिणामोन्मुख शिक्षण पद्धतियों से अवगत कराना था। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, ब्लूम के अधिगम वर्गीकरण (Bloom's

Taxonomy) तथा परिणाम-आधारित शिक्षा की मूलभूत अवधारणाओं से परिचित कराया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम परिणामों (Course Outcomes) का निर्धारण, मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) एवं मिश्रित अधिगम (Blended Learning) आधारित पाठ्यक्रम नियोजन, डिजिटल मूल्यांकन उपकरणों एवं मूल्यांकन रूब्रिक (Assessment Rubrics) का विकास पर आधारित शिक्षण सत्र योजना एवं नवाचारी प्रयोगशाला शिक्षण गतिविधियों का निर्माण जैसे प्रमुख व्यावहारिक कार्य संपादित किए। इस कार्यक्रम की समन्वयक प्रो. सीमा वर्मा थी तथा संकाय सदस्य के रूप में डॉ. जे. पी. टेगर ने योगदान दिया।



"Industrial PLC एंड SCADA" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग विभाग द्वारा दिनांक 13 से 17 जुलाई 2026 तक "Industrial PLC एंड SCADA" विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों के 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को औद्योगिक स्वचालन (Industrial Automation), प्रोग्रामेबल लॉजिक कंट्रोलर (PLC) तथा सुपरवाइजरी कंट्रोल एंड डेटा एक्विजिशन (SCADA) की मूलभूत अवधारणाओं, कार्यप्रणाली एवं व्यावहारिक अनुप्रयोगों से परिचित कराना था।

प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को ऑटोमेशन एवं उसके प्रकार, सेंसर, ट्रांसड्यूसर एवं एक्चुएटर, PLC का विकास, PLC के प्रमुख भाग एवं आर्किटेक्चर तथा PLC प्रोग्रामिंग की आधारभूत जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम के अंतर्गत टाइमर एवं काउंटर की प्रोग्रामिंग तथा उनके उदाहरण, PLC के विभिन्न उपयोग एवं PLC

Instructions के अंतर्गत Program Control Instructions, Arithmetic Instructions, Data Manipulation Instructions, Sequencer तथा Shift Register Instructions जैसे विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. सी. एस. राजेश्वरी थी तथा संकाय सदस्य के रूप में डॉ. डॉ. मनिकवासगम ने योगदान दिया।



इंडक्शन प्रोग्राम आयोजित

संस्थान के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग विभाग द्वारा दिनांक 11 से 20 मई 2026 तक "इंडक्शन प्रोग्राम फेज -II" आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों के 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को शिक्षण-अधिगम की आधुनिक अवधारणाओं, प्रभावी शिक्षण पद्धतियों, मूल्यांकन तकनीकों, प्रौद्योगिकी-सक्षम शिक्षण तथा उच्च शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन से संबंधित नवीनतम जानकारी एवं व्यावहारिक कौशल प्रदान करना था। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को सीखने के विभिन्न सिद्धांतों, यथा व्यवहारवादी, संज्ञानात्मक, रचनावादी एवं संयोजकतावादी (Connectivism) सिद्धांतों की उदाहरण सहित जानकारी प्रदान की गई। इसके साथ ही विभिन्न

अधिगम विधियों, क्रिया-आधारित शिक्षा, पूछताछ-आधारित शिक्षा तथा सहयोगात्मक शिक्षा पर भी विस्तृत चर्चा की गई। प्रशिक्षण में NBA मान्यता एवं उसके मानदंड, शिक्षण की नवीन पद्धतियों जैसे सिमुलेशन, वर्चुअल लैब, गेम-आधारित शिक्षा एवं समस्या-आधारित शिक्षा तथा नवीन प्रयोगशाला के डिजाइन से संबंधित विषयों को शामिल किया गया। प्रतिभागियों को अनुभव-आधारित शिक्षण, स्पेसिफिकेशन टेबल/कोर्स मूल्यांकन योजना, प्रश्न-पत्र निर्माण एवं विश्लेषण तथा ओपन-बुक परीक्षा की अवधारणा से भी अवगत कराया गया। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. सी. एस. राजेश्वरी थी तथा संकाय सदस्य के रूप में प्रो. सुसन एस मैथ्यू, डॉ. लामा राजू एवं डॉ. सीमा वर्मा ने संकाय सदस्य के रूप में योगदान दिया।



करिकुलम डिज़ाइन एंड डेवलपमेंट पर कार्यशाला

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन विभाग द्वारा दिनांक 20 से 24 अप्रैल, 2026 तक बिहार इंजीनियरिंग विश्वविद्यालय पटना में “करिकुलम डिज़ाइन एंड डेवलपमेंट” विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 82 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम (Curriculum) के वैज्ञानिक डिज़ाइन, विकास एवं प्रभावी क्रियान्वयन की प्रक्रिया से प्रतिभागियों को परिचित कराना तथा उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित शैक्षणिक

मानकों एवं गुणवत्ता मानदंडों के अनुरूप पाठ्यक्रम निर्माण की व्यावहारिक समझ प्रदान करना था। प्रशिक्षण के दौरान पाठ्यक्रम विकास के सिद्धांतों, परिणाम-आधारित शिक्षा (Outcome Based Education), कार्यक्रम संरचना (Program Structure), पाठ्यक्रम नियोजन तथा मूल्यांकन प्रणाली पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यशाला की समन्वयक डॉ. अंजू रौले तथा डॉ. संजय अग्रवाल, डॉ.आर. के. कपूर व डॉ. अंजलि पोतनिस ने योगदान दिया।

एम.एस.बी.ऐ.ई. प्रोजेक्ट कार्यशाला आयोजित

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 29 से 30 मई तक महाराष्ट्र स्टेट बोर्ड ऑफ आर्ट एजुकेशन की “फैकल्टी ट्रेनिंग” हेतु ऑनलाइन कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में विभिन्न संस्थानों से 118 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य महाराष्ट्र राज्य के विभिन्न कला पाठ्यक्रमों के लिए एक समग्र और उन्नत करिकुलम तैयार करना था, जो एनईपी-2020 और एनसीआरएफ 2023 की गाइडलाइंस के अनुरूप हो। इस कार्यक्रम में विभिन्न डिप्लोमा प्रोग्राम्स जैसे कि फाउंडेशन, डिप्लोमा ड्राइंग एंड प्लानिंग, डिप्लोमा एप्लाइड आर्ट, स्कल्पचर एंड

मॉडलिंग, टेक्सटाइल डिज़ाइन, इंटीरियर्स डेकोरेशन, और मेटल वर्क आदि के लिए पाठ्यक्रम विकास की जानकारी प्रदान की गई। कार्यशाला में महाविद्यालयों के शिक्षकों को करिकुलम के पुनरावलोकन और सुधार की प्रक्रिया से अवगत कराया गया। इस कार्यक्रम में एम.एस.बी.ऐ.ई. के निदेशक डॉ. इंगले, सचिव श्री संदीप डोंगरे और सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट, आर्किटेक्चर की चीफ को-ऑर्डिनेटर श्रीमती स्मिता किंकाले उपस्थित थीं। इस कार्यशाला के समन्वयक डॉ. जे. पी. टेगर थे।



आउटकम बेस्ड करिकुलम डेवलपमेंट एंड असेसमेंट फॉर कंप्यूटर एप्लीकेशन पर कार्यशाला

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन विभाग द्वारा दिनांक 06 से 10 अप्रैल, 2026 तक ठाकुर इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, करियर डेवलपमेंट एंड रिसर्च, मुंबई में “आउटकम बेस्ड करिकुलम डेवलपमेंट एंड असेसमेंट फॉर कंप्यूटर एप्लीकेशन” विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। गई। इस कार्यशाला में विभिन्न संस्थानों से 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य कंप्यूटर एप्लीकेशन कार्यक्रमों के लिए परिणाम-आधारित शिक्षा (Outcome Based Education–OBE) की अवधारणा के अनुरूप पाठ्यक्रम विकास, अधिगम परिणामों (Learning Outcomes) के निर्धारण, प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया तथा

परिणाम-आधारित मूल्यांकन प्रणाली की जानकारी प्रदान करना था। कार्यशाला के विभिन्न तकनीकी सत्रों में पाठ्यक्रम संरचना (Curriculum Structure), कोर्स डिज़ाइन, क्रेडिट निर्धारण, ब्लूम्स टैक्सोनामी के आधार पर अधिगम परिणामों का निर्धारण, परिणाम-आधारित मूल्यांकन (Outcome Based Assessment), प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष मूल्यांकन विधियाँ, CO–PO मैपिंग, रूब्रिक्स (Rubrics) का विकास तथा सतत गुणवत्ता सुधार (Continuous Quality Improvement–CQI) पर विस्तृत जानकारी दी गई। इस कार्यशाला के समन्वयक डॉ. जे. पी. टेगर व डॉ. सीमा वर्मा थे।

आउटकम बेस्ड करिकुलम डेवलपमेंट फॉर आर्किटेक्चर प्रोग्राम पर कार्यशाला

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन विभाग द्वारा दिनांक 18 से 22 मई, 2026 तक हिमालय कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, त्रिभुवन यूनिवर्सिटी नेपाल में “आउटकम बेस्ड करिकुलम डेवलपमेंट फॉर आर्किटेक्चर प्रोग्राम” विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में विभिन्न संस्थानों से 14 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य आर्किटेक्चर कार्यक्रम के लिए परिणाम-आधारित शिक्षा (Outcome Based Education–OBE) के

सिद्धांतों के अनुरूप पाठ्यक्रम के विकास, पुनर्संरचना एवं प्रभावी क्रियान्वयन की प्रक्रिया से प्रतिभागियों को परिचित कराना तथा उन्हें अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों के अनुरूप पाठ्यक्रम निर्माण की व्यावहारिक जानकारी प्रदान करना था। इस कार्यशाला की समन्वयक डॉ. अंजू रौले थी व डॉ. निशीथ दुबे ने संकाय सदस्य के रूप में योगदान दिया।

करिकुलम डिज़ाइन एंड डेवलपमेंट पर कार्यशाला

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन विभाग द्वारा दिनांक 25 से 29 मई, 2026 तक सेंट्रल यूनिवर्सिटी राजस्थान में “करिकुलम डिज़ाइन एंड डेवलपमेंट” विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को पाठ्यक्रम डिज़ाइन एवं विकास की अवधारणाओं, सिद्धांतों, प्रक्रियाओं तथा गुणवत्ता मानकों की गहन एवं व्यावहारिक समझ प्रदान करना था। प्रशिक्षण के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP-2020)

परिणाम-आधारित शिक्षा (Outcome Based Education–OBE), बहुविषयक शिक्षा, कौशल-आधारित अधिगम तथा समकालीन शैक्षणिक आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम निर्माण के विभिन्न आयामों पर विस्तृत जानकारी प्रदान करना था। इस कार्यशाला की समन्वयक डॉ. अंजू रौले थी व डॉ. संजय अग्रवाल एवं डॉ. आर. के. कपूर ने संकाय सदस्य के रूप में योगदान दिया।

इनोवेशन एंड इनक्यूबेशन फॉर इंजीनियरिंग फैकल्टी

संस्थान के मैकेनिकल अभियांत्रिकी शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 20 से 24 जुलाई 2026 तक “डिजाइन फॉर एडिटिव मैनुफैक्चरिंग: मटेरियल्स, प्रोसेसेज एंड एप्लिकेशन्स” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया। एडिटिव मैनुफैक्चरिंग (Additive Manufacturing- AM) एक अत्याधुनिक विनिर्माण तकनीक है, जो डिजिटल मॉडल के आधार पर जटिल अवयवों का प्रत्यक्ष निर्माण करते हुए सामग्री की बर्बादी को न्यूनतम करती है। इसके परिणामस्वरूप उत्पाद अभिकल्पन (Product Design) एवं विनिर्माण (Manufacturing) के क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन संभव हुए हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को उत्पाद अभिकल्पन के सिद्धांतों, एडिटिव मैनुफैक्चरिंग तकनीकों, विभिन्न सामग्रियों, विनिर्माण प्रक्रियाओं तथा उनके औद्योगिक अनुप्रयोगों का व्यापक ज्ञान प्रदान करना था।

कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिभागियों को CAD मॉडलिंग, पॉलीमर एवं धातु आधारित 3D प्रिंटिंग, वायर आर्क एडिटिव मैनुफैक्चरिंग (WAAM), रिवर्स इंजीनियरिंग तथा 3D स्कैनिंग का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया, जिससे वे उन्नत विनिर्माण तकनीकों से संबंधित व्यवहारिक दक्षताओं का विकास कर सकें। इस कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. रवि कुमार गुप्ता व सह-समन्वयक डॉ. एल.एस. राजू थे।



“कैड 2डी एवं 3डी मॉडलिंग यूज़िंग मॉडर्न सॉफ्टवेयर” पर कार्यक्रम

संस्थान के मैकेनिकल अभियांत्रिकी विभाग द्वारा दिनांक 22 से 26 जून 2026 तक “कैड 2डी एवं 3डी मॉडलिंग यूज़िंग मॉडर्न सॉफ्टवेयर” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को आधुनिक इंजीनियरिंग डिजाइन सॉफ्टवेयर के माध्यम से सटीक 2D इंजीनियरिंग ड्राइंग तथा 3D कंपोनेंट एवं असेंबली मॉडल तैयार करने की तकनीकों

पर विस्तृत जानकारी दी गई, ये तकनीकें विनिर्माण, उत्पाद विकास तथा औद्योगिक डिजाइन के क्षेत्र में व्यापक रूप से उपयोग की जाती हैं। प्रशिक्षण का प्रमुख उद्देश्य प्रतिभागियों की ड्राफ्टिंग, मॉडलिंग, डाइमेंशनिंग, असेंबली निर्माण तथा डिजाइन डॉक्यूमेंटेशन से संबंधित तकनीकी दक्षताओं को विकसित करना था, ताकि वे औद्योगिक प्रथाओं एवं प्रचलित मानकों के अनुरूप कार्य कर सकें। इस कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. रवि कुमार गुप्ता थे।



इंडक्शन प्रोग्राम – II आयोजित

संस्थान के मैकेनिकल अभियांत्रिकी शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 29 जून से 10 जुलाई 2026 तक "इंडक्शन प्रोग्राम – II" आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 41 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कार्यरत तकनीकी शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण-अधिगम पद्धतियों, डिजिटल तकनीकों एवं नवीन शैक्षणिक उपकरणों से परिचित कराना तथा बदलते तकनीकी एवं औद्योगिक परिवेश की आवश्यकताओं के

अनुरूप उनकी व्यावसायिक दक्षताओं का विकास करना था। कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षकों में अधिगम के सिद्धांतों की समझ, नवीन शिक्षण विधियों के प्रभावी उपयोग, ICT एवं प्रौद्योगिकी-सक्षम अधिगम, विद्यार्थी-केंद्रित मूल्यांकन तथा शिक्षण संसाधनों के विकास से संबंधित विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. रवि कुमार गुप्ता थे व प्रो. एम.सी. पालीवाल, प्रो. पराग दुबे एवं प्रो. सुमन पटनायक ने सहयोग प्रदान किया।



“आईसीटी टूल्स फॉर एन्हांसिंग टीचिंग एंड लर्निंग” पर कार्यक्रम

संस्थान के मैकेनिकल अभियांत्रिकी शिक्षा विभाग द्वारा एक्सटेंशन सेंटर पुणे में दिनांक 08 से 12 जून तक "आईसीटी टूल्स फॉर एन्हांसिंग टीचिंग एंड लर्निंग" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 09 प्रतिभागियों ने भाग लिया। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के तीव्र विकास ने शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन किया है। आधुनिक ICT उपकरणों एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म के प्रभावी उपयोग से शिक्षण, अधिगम, मूल्यांकन तथा शैक्षणिक प्रशासन की प्रक्रियाओं को अधिक प्रभावी, सहभागितापूर्ण एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनाया जा सकता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों एवं शिक्षाविदों को आधुनिक ICT उपकरणों के प्रभावी उपयोग हेतु व्यावहारिक ज्ञान एवं हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण प्रदान करना तथा कक्षा शिक्षण एवं अधिगम को अधिक प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म एवं अनुप्रयोगों से परिचित कराना था। प्रतिभागियों को तकनीक-सक्षम अधिगम अनुभवों के डिजाइन, डिजिटल लर्निंग संसाधनों के विकास तथा

ऑनलाइन एवं मिश्रित (Blended) शिक्षण पद्धतियों के प्रभावी संचालन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सहयोगात्मक अधिगम वातावरण, क्लाउड-आधारित उपकरणों तथा मुक्त शैक्षणिक संसाधनों के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. रवि कुमार गुप्ता थे व प्रो. रणजीत सिंह ने सहयोग प्रदान किया।



“हेल्थकेयर/बायोमेडिकल में एडिटिव मैनुफैक्चरिंग के अनुप्रयोग” पर कार्यक्रम

संस्थान के मैकेनिकल अभियांत्रिकी शिक्षा विभाग द्वारा सीओईपी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पुणे में दिनांक 20 से 24 अप्रैल तक "हेल्थकेयर/बायोमेडिकल में एडिटिव मैनुफैक्चरिंग के अनुप्रयोग" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया। एडिटिव मैनुफैक्चरिंग (Additive Manufacturing-AM), जिसे सामान्यतः 3D प्रिंटिंग के नाम से जाना जाता है, एक उन्नत विनिर्माण तकनीक है। इसके माध्यम से डिजिटल मॉडल के आधार पर त्रि-आयामी (3D) ठोस वस्तुओं एवं घटकों का निर्माण सामग्री को क्रमिक रूप से परत-दर-परत जोड़कर किया जाता है। इस तकनीक के

माध्यम से जटिल ज्यामितीय संरचनाओं, सूक्ष्म डिजाइन तथा आवश्यकतानुसार अनुकूलित (Customized) उत्पादों का निर्माण संभव हो पाता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को एडिटिव मैनुफैक्चरिंग के मूलभूत सिद्धांतों, विभिन्न तकनीकों एवं हेल्थकेयर तथा बायोमेडिकल इंजीनियरिंग में इसके अनुप्रयोगों की विस्तृत जानकारी प्रदान करना था। कार्यक्रम में प्रतिभागियों को एडिटिव मैनुफैक्चरिंग की कार्यप्रणाली, विभिन्न प्रक्रियाओं तथा चिकित्सा एवं जैव-चिकित्सीय क्षेत्रों में इसकी उपयोगिता से परिचित कराया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. रवि कुमार गुप्ता थे व) प्रो.विपिन कुमार त्रिपाठी ने सहयोग प्रदान किया।



"आउटकम बेस्ड एजुकेशन एंड एक्रिडिटेशन"

विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र, गोवा द्वारा दिनांक 06 से 10 अप्रैल 2026 तक "आउटकम बेस्ड एजुकेशन एंड एक्रिडिटेशन" विषय पर पाँच दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी)-2020 के अनुरूप परिणाम-आधारित शिक्षा (Outcome Based Education-OBE) अवधारणा, उसके प्रभावी क्रियान्वयन तथा

प्रत्यायन (Accreditation) प्रक्रिया की समग्र समझ विकसित करना था। कार्यक्रम के माध्यम से प्रतिभागियों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को परिणामोन्मुख बनाने, गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक वातावरण विकसित करने तथा प्रत्यायन मानकों के अनुरूप संस्थागत व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने संबंधी आवश्यक जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. एलन रोचा थे और संकाय सदस्य के रूप में डॉ. जे. पी. टेगर ने योगदान दिया।

"सोलर प्लांट डिज़ाइन एंड एप्लायंसेज़"

विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र, गोवा द्वारा दिनांक 18 से 22 मई 2026 तक "सोलर प्लांट डिज़ाइन एंड एप्लायंसेज़" विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में इंजीनियरिंग महाविद्यालयों, पॉलिटेक्निक संस्थानों तथा अन्य तकनीकी संस्थानों से कुल 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में श्री भूषण सावईकर, निदेशक, तकनीकी शिक्षा, गोवा तथा श्री प्रदीप कुसनूर, उप निदेशक (तकनीकी शिक्षा), गोवा की गरिमामयी उपस्थिति रही। प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य प्रतिभागियों को सौर फोटोवोल्टिक (पीवी) प्रौद्योगिकी के सिद्धांतों, अभिकल्पना, स्थापना, संचालन एवं अनुरक्षण से संबंधित समग्र एवं व्यावहारिक जानकारी प्रदान करना था। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अक्षय ऊर्जा के बढ़ते महत्व तथा स्वच्छ एवं सतत ऊर्जा प्रणालियों के प्रभावी उपयोग को दृष्टिगत रखते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई, जिससे प्रतिभागियों की तकनीकी दक्षता एवं व्यावसायिक क्षमता का विकास

सुनिश्चित किया जा सके। प्रशिक्षण के दौरान आयोजित विभिन्न तकनीकी सत्रों में सौर ऊर्जा प्रणालियों के सिद्धांत, सोलर प्लांट डिज़ाइन, उपकरणों का चयन, प्रणाली का आकार निर्धारण (System Sizing), स्थापना प्रक्रिया, प्रदर्शन विश्लेषण, सुरक्षा मानक, परीक्षण एवं कमीशनिंग, संचालन एवं अनुरक्षण (Operation and Maintenance) तथा सौर ऊर्जा प्रणालियों के विभिन्न औद्योगिक एवं संस्थागत अनुप्रयोगों पर विशेषज्ञों द्वारा विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिभागियों के लिए 30 किलोवाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र का शैक्षणिक भ्रमण भी आयोजित किया गया। इस भ्रमण के दौरान प्रतिभागियों ने सौर फोटोवोल्टिक प्रणाली की अभिकल्पना, स्थापना, संचालन एवं अनुरक्षण प्रक्रियाओं का प्रत्यक्ष अवलोकन किया तथा विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में संयंत्र के विभिन्न तकनीकी पहलुओं की व्यावहारिक जानकारी प्राप्त की। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. एलन रोचा थे।

"नेक्स्ट-जनरेशन टूल्स: ट्रेंड्स एंड फ्यूचर डायरेक्शन्स इन मॉलेक्यूलर बायोलॉजी" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के गुजरात विस्तार केन्द्र द्वारा गुजरात प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अहमदाबाद में दिनांक 06 से 10 अप्रैल 2026 तक "नेक्स्ट-जनरेशन टूल्स: ट्रेंड्स एंड फ्यूचर डायरेक्शन्स इन मॉलेक्यूलर बायोलॉजी" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 21 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को आणविक जीवविज्ञान (Molecular Biology) के क्षेत्र में नवीनतम तकनीकों, अनुसंधान पद्धतियों एवं उभरते अनुप्रयोगों से परिचित कराना था। कार्यक्रम के अंतर्गत विशेषज्ञों द्वारा फीनोटाइपिक पहचान, VITEK-2, MALDI-TOF, डीएनए निष्कर्षण, RT-PCR, लक्ष्य पहचान (Target Detection), नेक्स्ट जेनरेशन सीक्वेंसिंग (NGS), लाइब्रेरी प्रिपरेशन, सेंगर सीक्वेंसिंग, 16S rRNA एवं BLAST विश्लेषण, PCR,

जेल इलेक्ट्रोफोरेसिस, सीक्वेंस विश्लेषण तथा ONT सीक्वेंसिंग जैसे विषयों पर व्याख्यान एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षुओं के लिए गुजरात बायोटेक्नोलॉजी रिसर्च सेंटर (GBRC), गांधीनगर का औद्योगिक भ्रमण भी आयोजित किया गया, जहाँ उन्हें अनुसंधान एवं विकास (R&D), उन्नत प्रयोगशाला उपकरणों तथा आधुनिक जैव-प्रौद्योगिकी तकनीकों के व्यावहारिक अनुप्रयोगों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम के दौरान प्रो. (डॉ.) वैभव भट्ट, डॉ. दौलत सिंह झाला, डॉ. शिप्रा चौहान, डॉ. आशिष वरघाने, डॉ. अनुपमा मोदी, डॉ. राजेश चौधरी, डॉ. चन्द्रशेखर मोटापल्ली, डॉ. विशा राठौर, डॉ. नीलम नाथानी, डॉ. रमेशचन्द्र पंडित तथा डॉ. कुलदीप लुहाना एवं डॉ. गौरव श्रीमाली ने विभिन्न तकनीकी विषयों पर व्याख्यान दिए। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे थे।



"स्मार्ट हेल्थकेयर टेक्नोलॉजीज़: एप्लिकेशन्स एंड ऑपच्युनिटीज़" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के गुजरात विस्तार केन्द्र द्वारा गुजरात प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अहमदाबाद में दिनांक 20 से 24 अप्रैल 2026 तक "स्मार्ट हेल्थकेयर टेक्नोलॉजीज़: एप्लिकेशन्स एंड ऑपच्युनिटीज़" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को स्मार्ट हेल्थकेयर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), वेयरबल प्रौद्योगिकी तथा उभरती डिजिटल स्वास्थ्य तकनीकों के नवीनतम अनुप्रयोगों एवं संभावनाओं से अवगत कराना था। कार्यक्रम के दौरान श्री भरत टैंक (असिस्टेंट प्रोफेसर एवं डिप्टी मैनेजर, पारुल विश्वविद्यालय) ने स्मार्ट हेल्थकेयर

सिस्टम की बुनियाद तथा वेयरबल टेक्नोलॉजी इन हेल्थकेयर विषयों पर व्याख्यान दिए। डॉ. के. मणिकवासगम ने शिक्षाशास्त्र के सिद्धांत एवं आधुनिक शिक्षण पद्धतियों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. जिग्नेश पटोलिया ने एम्बेडेड IoT डिवाइस एवं स्मार्ट सिस्टम, डॉ. अभिषेक जोशी ने हेल्थकेयर में TinyML, डॉ. चिंतन भट्ट ने हेल्थकेयर में बड़े भाषा मॉडल (LLM) एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा डॉ. संतोष कुमार सतपथी ने हेल्थकेयर सिग्नल प्रोसेसिंग में व्याख्या योग्य AI (Explainable AI) विषय पर विशेषज्ञ व्याख्यान दिए। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. के. मणिकवासगम थे।



"आउटकम-बेस्ड एजुकेशन एंड असेसमेंट" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के गुजरात विस्तार केन्द्र द्वारा सरदार पटेल विश्वविद्यालय, आणंद में दिनांक 20 से 24 अप्रैल 2026 तक "आउटकम-बेस्ड एजुकेशन एंड असेसमेंट" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 42 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों एवं शैक्षणिक संस्थानों के प्रतिनिधियों को परिणाम-आधारित शिक्षा (Outcome Based Education-OBE) की अवधारणा, इसके प्रभावी क्रियान्वयन तथा मूल्यांकन की आधुनिक पद्धतियों से परिचित कराना था। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम विकास, अधिगम उद्देश्यों के अनुरूप शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, विभिन्न मूल्यांकन उपकरणों का उपयोग, सतत मूल्यांकन



प्रणाली तथा विद्यार्थियों की दक्षताओं के प्रभावी आकलन की प्रक्रियाओं से अवगत कराया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे थे व डॉ. आशीष देशपांडे ने योगदान दिया।

"परिणाम आधारित मूल्यांकन" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के गुजरात विस्तार केन्द्र द्वारा दिनांक 20 से 24 अप्रैल 2026 तक "परिणाम आधारित मूल्यांकन" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों एवं शैक्षणिक संस्थानों में परिणाम-आधारित शिक्षा (Outcome Based Education-OBE) तथा प्रभावी मूल्यांकन प्रक्रियाओं की समझ विकसित करना था। कार्यक्रम के दौरान परिणाम-आधारित शिक्षा की आवश्यकता, उद्देश्यों एवं उच्च शिक्षा में इसकी प्रासंगिकता पर विस्तृत चर्चा की गई। कार्यक्रम में परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम विकास, विज्ञान, मिशन, प्रोग्राम एजुकेशनल ऑब्जेक्टिव्स (PEOs), प्रोग्राम आउटकम्स (POs), प्रोग्राम स्पेसिफिक आउटकम्स (PSOs) तथा कोर्स आउटकम्स (COs), परिणाम-आधारित मूल्यांकन प्रणाली



तथा उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक क्षमताओं के आकलन की तकनीकों पर व्यावहारिक उदाहरणों सहित विस्तृत व्याख्यान दिए गए। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. एस. एस. केदार थे व डॉ. आर. पी. खम्बायत ने योगदान दिया।

"रुब्रिक्स फॉर द इवैल्यूएशन ऑफ प्रोजेक्ट वर्क" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के गुजरात विस्तार केन्द्र द्वारा दिनांक 20 से 24 अप्रैल 2026 तक "रुब्रिक्स फॉर द इवैल्यूएशन ऑफ प्रोजेक्ट वर्क, प्रॉब्लम-बेस्ड लर्निंग एंड इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP-2020), राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क (NCrF), राष्ट्रीय उच्च शिक्षा योग्यता फ्रेमवर्क (NHEQF) तथा विकसित भारत शिक्षा अधिष्ठान विधेयक के परिप्रेक्ष्य में आउटकम-बेस्ड एजुकेशन (OBE), पाठ्यक्रम विकास, कोर्स आउटकम्स (COs), प्रोग्राम आउटकम्स (POs) तथा अधिगम वर्गीकरण (Learning Taxonomy) की अवधारणाओं से प्रतिभागियों को अवगत कराना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को परिणाम-आधारित



मूल्यांकन प्रणाली को प्रभावी ढंग से लागू करने तथा परियोजना कार्य, समस्या-आधारित अधिगम एवं औद्योगिक प्रशिक्षण के मूल्यांकन हेतु रुब्रिक्स के विकास और उपयोग की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. सचिन तिवारी थे व डॉ. रंजित सिंह चौहान ने योगदान दिया।

"वित्तीय प्रौद्योगिकी" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के गुजरात विस्तार केन्द्र द्वारा दिनांक 27 अप्रैल से 01 मई 2026 तक "वित्तीय प्रौद्योगिकी (FinTech)" विषय पर आयोजित कार्यक्रम" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 44 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों, शोधकर्ताओं एवं विद्यार्थियों को वित्तीय प्रौद्योगिकी के तीव्र गति से विकसित होते क्षेत्र में नवीनतम तकनीकों, नवाचारों एवं समकालीन प्रवृत्तियों से अवगत कराना था। कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञों द्वारा फिनटेक के विभिन्न आयामों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। श्री पार्थ देवरिया ने फिनटेक इकोसिस्टम का अवलोकन, डॉ. हेतल व्यास, फिनटेक फैकल्टी, GLS यूनिवर्सिटी ने ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी एवं वित्तीय क्षेत्र पर इसका प्रभाव, डॉ. विवेक श्रीवास्तव, चीफ एग्जीक्यूटिव, एक्सिस बैंक (GIFT IBU) ने डिजिटल बैंकिंग एवं नियो बैंक, तथा डॉ. युपाल शुक्ला, फैकल्टी, हायर कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी, UAE ने डिजिटल भुगतान प्रणाली-वैश्विक परिप्रेक्ष्य विषयों पर जानकारी प्रदान की। श्री दीपक उपाध्याय,



GSET-GTU ने फिनटेक में साइबर सुरक्षा, श्री चिंतन पटेल, एकेडमिक एसोसिएट, IIMA ने फिनटेक उद्योग में AI एवं ML, डॉ. राजसी जोशी, यूनिवर्सिटी ऑफ वोलोंगोंग ने लेंडिंग में फिनटेक-P2P से क्राउडफंडिंग तक, डॉ. डिमिट्रियोस सलामपैसिस, फिनटेक कैपेबिलिटी लीड, स्विनबर्न यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, ऑस्ट्रेलिया ने इंश्योरटेक एवं बीमा क्षेत्र में नवाचार तथा श्री बिरजू नाइक, संस्थापक, क्रेडिन ने फिनटेक में रेगुलेटरी टेक्नोलॉजी (RegTech) विषयों पर विशेषज्ञ व्याख्यान दिए। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे थे।

"एआई एवं आईओटी आधारित स्मार्ट सिटी सिस्टम्स फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के गुजरात विस्तार केन्द्र द्वारा दिनांक 18 से 22 मई 2026 तक "एआई एवं आईओटी आधारित स्मार्ट सिटी सिस्टम्स फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 21 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य स्मार्ट शहरों के विकास में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एवं इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) की भूमिका तथा सतत विकास के लिए इनके प्रभावी उपयोग से प्रतिभागियों को अवगत कराना था। कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञों द्वारा स्मार्ट सिटी, जल प्रबंधन, परिवहन, पर्यावरण निगरानी एवं अवसंरचना विकास में AI एवं IoT के अनुप्रयोगों पर व्याख्यान एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कार्यक्रम में श्री रवि सोलंकी ने स्मार्ट जल आपूर्ति प्रणालियों में AI, IoT एवं डेटा आधारित परिचालन दक्षता पर जानकारी दी। डॉ. रमेश गुप्ता बुरेला ने AI एवं मशीन लर्निंग की मूलभूत अवधारणाओं तथा CAE में इनके उपयोग पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। डॉ. आनंद मेहता ने अहमदाबाद में भूमि सतह तापमान की प्रेडिक्टिव मॉडलिंग, डॉ. राजेश गुर्जर ने सतत परिवहन प्रणालियों



में AI के अनुप्रयोग, डॉ. जशवंत आर. दवे ने सुरक्षित एवं स्केलेबल स्मार्ट सिटी आर्किटेक्चर तथा डॉ. जितेन शाह ने ट्रैफिक इंजीनियरिंग में AI एवं मशीन लर्निंग के उपयोग पर प्रकाश डाला। डॉ. दया कौल ने सेंसर नेटवर्क, मशीन लर्निंग एवं वायु प्रदूषण विश्लेषण के माध्यम से पर्यावरणीय निगरानी की संभावनाओं पर चर्चा की। डॉ. जिग्नेश पटोलिया ने IoT उपकरणों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया तथा डॉ. अमनदीप गुप्ता ने स्मार्ट सिटी में AI आधारित अवसंरचना विकास की अवधारणा पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. रमेश गुप्ता बुरेला थे।

"रिसर्च मेथडोलॉजी, एथिक्स एंड एआई टूल्स" विषय पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के गुजरात विस्तार केन्द्र द्वारा दिनांक 25 से 29 मई 2026 तक "रिसर्च मेथडोलॉजी, एथिक्स एंड एआई टूल्स" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य शोधकर्ताओं एवं शिक्षकों को अनुसंधान पद्धति, अनुसंधान नैतिकता तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित आधुनिक उपकरणों के प्रभावी एवं उत्तरदायी उपयोग से परिचित कराना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान अनुसंधान की संपूर्ण प्रक्रिया को व्यावहारिक एवं समकालीन दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया। विभिन्न विशेषज्ञों ने शोध समस्या के चयन, अनुसंधान अभिकल्प, डेटा संग्रहण एवं विश्लेषण, अनुसंधान प्रस्ताव लेखन, शोध प्रकाशन, शोध गुणवत्ता, कॉपीराइट एवं बौद्धिक संपदा अधिकार, अनुसंधान नैतिकता तथा वैश्विक शोध परिदृश्य जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से विचार साझा किए। साथ ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित उपकरणों के उत्तरदायी उपयोग, गुणवत्तापूर्ण शोध में उनकी भूमिका तथा भविष्य की अनुसंधान संभावनाओं पर भी



विस्तृत चर्चा की गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ. (प्रो.) राजुल के. गज्जर, प्रो. डॉ. निशीथ दुबे, डॉ. राजेश ठक्कर, डॉ. एन. एम. भट्ट, डॉ. सी. बी. भट्ट, डॉ. गजानन अबडि, प्रो. विभा पटेल, डॉ. माधुरी भावसार, डॉ. दौलत सिंह झाला, डॉ. निहार, डॉ. आभा छाबड़ा तथा डॉ. दीपाली पलावत ने विशेषज्ञ वक्ता के रूप में अपने अनुभव एवं ज्ञान का साझा किया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. एस. गणपति थे।

"आईसीटी टूल्स" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के गुजरात विस्तार केन्द्र द्वारा निरमा विश्वविद्यालय, अहमदाबाद में दिनांक 8 से 12 जून 2026 तक "आईसीटी टूल्स फॉर वर्क एफिशिएंसी एंड लाइफ स्किल्स फॉर एनहैंस्ड वर्क परफॉर्मेंस" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 41 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों के व्यक्तित्व विकास, कार्यालयीन कार्यकुशलता तथा आधुनिक डिजिटल प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने बदलते कार्य परिवेश के अनुरूप आवश्यक व्यावसायिक कौशल, सूचना प्रौद्योगिकी तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरणों के उपयोग पर प्रशिक्षण प्रदान किया। प्रशिक्षण के विभिन्न सत्रों में जीवन कौशल, समय प्रबंधन, कार्य संस्कृति, व्यवहारिक दक्षता, प्रभावी संचार, तनाव प्रबंधन तथा

कार्यस्थल पर उत्पादकता एवं गुणवत्ता में सुधार के उपायों पर विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस के उन्नत अनुप्रयोगों, विशेष रूप से एम.एस. वर्ड एवं एम.एस. एक्सेल की नवीन सुविधाओं, डेटा प्रबंधन एवं विश्लेषण तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरणों के प्रभावी उपयोग का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। विशेषज्ञों ने इस बात पर विशेष बल दिया कि आधुनिक डिजिटल तकनीकों एवं एआई उपकरणों का समुचित उपयोग दैनिक कार्यालयीन कार्यों को अधिक सरल, प्रभावी, सटीक एवं समयबद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे थे व श्री आशिष चाटकवार एवं श्री परिवेश कस्तुरिया ने सहयोग प्रदान किया।



"इंटीग्रेशन ऑफ OBE, NCrf एंड NHEQF फॉर हायर एजुकेशन" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के गुजरात विस्तार केन्द्र द्वारा गुजरात प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में दिनांक 15 से 19 जून 2026 तक "इंटीग्रेशन ऑफ OBE, NCrf एंड NHEQF फॉर हायर एजुकेशन" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप परिणाम-आधारित शिक्षा (Outcome-Based Education), राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क (NCrf) तथा राष्ट्रीय उच्च शिक्षा योग्यता फ्रेमवर्क (NHEQF) की अवधारणाओं को प्रभावी रूप से समझाना तथा उन्हें पाठ्यक्रम विकास, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया एवं मूल्यांकन प्रणाली में समेकित करने की दिशा में प्रतिभागियों को व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करना था। कार्यक्रम के दौरान परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम निर्माण, पाठ्यक्रम एवं कार्यक्रम परिणामों का निर्धारण, क्रेडिट प्रणाली, भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश, राष्ट्रीय योग्यता एवं कौशल फ्रेमवर्क, पाठ्यक्रम नियोजन, गुणवत्ता आश्वासन, प्रत्यायन, संस्थागत



रैंकिंग, नवाचार, उद्यमिता तथा नई शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप उच्च शिक्षा में आवश्यक शैक्षणिक सुधारों जैसे विविध समसामयिक विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। विशेषज्ञों ने उच्च शिक्षा संस्थानों में गुणवत्ता, लचीलापन, कौशल विकास तथा उद्योगोन्मुख शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए इन राष्ट्रीय फ्रेमवर्कों के प्रभावी क्रियान्वयन पर विशेष बल दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ. (प्रो.) राजुल के. गज्जर, डॉ. के. एन. खेर, डॉ. राजेश कुमार जैन, डॉ. सागर दवे, डॉ. पंकज गज्जर, डॉ. तेजल मेहता, सुश्री कीर्ति आइलानी, डॉ. नीलेश मोदी, डॉ. पंकजराय पटेल, डॉ. कौशल भट्ट तथा डॉ. कौशिक बी. कनाडा ने विशेषज्ञ के रूप में योगदान दिया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे थे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के गुजरात विस्तार केन्द्र में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर दिनांक 5 जून, 2026 को कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर परिसर में नीम, पीपल, अशोक सहित विभिन्न छायादार एवं पर्यावरण-अनुकूल पौधों का रोपण किया गया तथा उनके संरक्षण का सामूहिक संकल्प लिया गया। केन्द्र द्वारा "बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट" (Best Out of Waste) की अवधारणा को अपनाते हुए प्लास्टिक की अनुपयोगी खाली बोतलों, कपों तथा अन्य बेकार वस्तुओं को उपयोगी एवं आकर्षक गमलों, सजावटी सामग्री तथा वर्टिकल गार्डन में परिवर्तित कर पर्यावरण संरक्षण का प्रभावी संदेश दिया जा रहा है। कर्मचारियों ने अपनी रचनात्मकता का परिचय देते हुए अनुपयोगी सामग्री से पर्यावरण-अनुकूल गमलों का निर्माण किया है। कार्यक्रम के दौरान जल संरक्षण, प्लास्टिक के न्यूनतम उपयोग, जैव विविधता के संरक्षण तथा स्वच्छ एवं हरित पर्यावरण के महत्व पर विचार साझा



किए गए। साथ ही अनुपयोगी प्लास्टिक की बोतलों के पुनः उपयोग के माध्यम से पौधारोपण जैसी पर्यावरण-अनुकूल पहल का प्रदर्शन किया गया, जिसकी प्रतिभागियों ने सराहना की। कार्यक्रम में "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान सहित व्यापक वृक्षारोपण एवं पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न उपायों पर भी चर्चा की गई।



"एआई फाउंडेशन फॉर द नेक्स्ट जेनरेशन ऑफ एप्लाइड साइंस, रिसर्च एंड इनोवेशन" विषय पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के गुजरात विस्तार केन्द्र द्वारा गुजरात प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में दिनांक 18 से 22 अप्रैल 2026 तक "एआई फाउंडेशन फॉर द नेक्स्ट जेनरेशन ऑफ एप्लाइड साइंस, रिसर्च एंड इनोवेशन" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 42 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) की मूलभूत अवधारणाओं, आधुनिक तकनीकों, अनुसंधान एवं नवाचार में इसके अनुप्रयोगों तथा विभिन्न क्षेत्रों में एआई के प्रभावी एवं जिम्मेदार उपयोग से परिचित कराना था। कार्यक्रम के दौरान शिक्षा, विज्ञान, अनुसंधान, डेटा विश्लेषण, स्वास्थ्य सेवाओं तथा नैतिकता के क्षेत्र में एआई की भूमिका पर विस्तृत चर्चा की गई। प्रशिक्षण के विभिन्न सत्रों में एआई आधारित शिक्षण उपकरण, मशीन लर्निंग, ट्रांसफॉर्मर तकनीक, कंटेनर टेक्नोलॉजी,

डेटा विश्लेषण, Explainable AI (XAI), स्वास्थ्य क्षेत्र में एआई आधारित निदान एवं पुनर्वास, डिजिटल हेल्थ इंटेलिजेंस, बायोइन्फॉर्मेटिक्स, एआई नैतिकता, डेटा गोपनीयता तथा जिम्मेदार एआई उपयोग जैसे समसामयिक विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई। प्रतिभागियों को उभरती हुई तकनीकों जैसे ह्यूमन-सेंसिंग एआई, EEG एनालिटिक्स एवं एआई आधारित नवाचारों से भी अवगत कराया गया। कार्यक्रम में डॉ. राजुल के. गज्जर, डॉ. पीना भट्ट, प्रो. डॉ. रमेश बुरेला गुप्ता, डॉ. वैभव भट्ट, डॉ. विशाल मेवाड़ा, श्री प्रवीण कुमार चंदालिया, प्रो. उत्तमा लाहिड़ी, डॉ. दौलतसिंह झाला, प्रो. संजय चौधरी, डॉ. किरण त्रिवेदी, डॉ. मानो जोसेफ मैथ्यू, डॉ. राजेश के. पटेल तथा डॉ. राजेश चौधरी ने विशेषज्ञ वक्ता के रूप में योगदान दिया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. नीरज राठौर थे।



"एनालिटिकल एंड न्यूमेरिकल मेथड्स" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

गुजरात प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में दिनांक 01 से 06 जून 2026 तक "एनालिटिकल एंड न्यूमेरिकल मेथड्स फॉर लीनियर एंड नॉन-लीनियर ऑर्डिनरी एंड पार्शियल" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को साधारण एवं आंशिक अवकल समीकरणों (ODE एवं PDE) के सिद्धांत, विश्लेषणात्मक एवं संख्यात्मक समाधान विधियों तथा विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के विभिन्न क्षेत्रों में उनके अनुप्रयोगों से अवगत कराना था। कार्यक्रम के दौरान गणितीय मॉडलिंग, संगणकीय तकनीकों, संख्यात्मक विश्लेषण तथा आधुनिक वैज्ञानिक समस्याओं के समाधान में अवकल समीकरणों की भूमिका पर विस्तृत चर्चा की गई। प्रतिभागियों को वायु गुणवत्ता मॉडलिंग, महामारी पूर्वानुमान, ऊष्मा स्थानांतरण, तरंग प्रसार एवं अन्य बहुआयामी क्षेत्रों में गणितीय मॉडलिंग के उपयोग से भी परिचित कराया गया। कार्यक्रम में डॉ. पीना



भट्ट, प्रो. डॉ. निशीथ दुबे, प्रो. मनोज साहनी, डॉ. जिग्नेश पटेल, श्री प्रेरककुमार पटेल, डॉ. नीता एच. शाह, डॉ. आकाश सिंह, डॉ. तौसीफ अहमद, डॉ. मुमुक्षु त्रिवेदी, डॉ. अजीत कुमार परवानी, डॉ. ऋतु साहनी, डॉ. मेघना पारिख, डॉ. रमेश डामोर, डॉ. पार्थ मेहता तथा डॉ. शिखा दीप ने विशेषज्ञ वक्ता के रूप में योगदान दिया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे थे।

Indian knowledge traditions take centre stage at NITTTR

► Dr Kanhere stresses value-based education; Maheshwari highlights Vande Mataram as symbol of national consciousness

Bhopal: A national-level programme on Indian Knowledge Traditions at NITTTR Bhopal brought into focus the philosophical depth and contemporary relevance of India's educational heritage, with key speakers underscoring its role in shaping both intellect and character. Delivering the keynote address, Dr. Ravindra Kanhere, President, Vidya Bharati Akhil Bharatiya Shiksha Sansthan, emphasised that education in the Indian tradition has always been viewed as a collective societal responsibility, not merely a state function. He said that Indian pedagogy extends beyond the transfer of knowledge, placing equal importance on character building and social commitment. Explaining the concept of Panchakoshy Shiksha, he outlined four stages of learners—those who listen, understand, practice, and ultimately disseminate knowledge.

In the second session, Nikhilesh Maheshwari, Organising Secretary, Vidya Bharati, Madhya Bharat, reflected on the historical and emotional significance of Vande Mataram. He described it as more than a patriotic song, calling it a timeless expression of India's self-respect and spiritual consciousness. Dr. C.C. Tripathi, Director, NITTTR Bhopal, said the training initiative aims to sensi-



tize teachers towards Indian culture and traditions while providing a framework for integrating Indian Knowledge Traditions into contemporary pedagogical practices.

Prof. P.K. Purohit, Dean of Science and Head, Department of Indian Knowledge Systems, observed that Indian knowledge traditions are not only a part of the nation's heritage but also continue to offer valuable guidance in present-day disciplines. The programme was conducted by Dr. Amit Dubey, while the vote of thanks was proposed by Dr. Ramendra Singh.



At the Bhartiya Gyan Parampara program organized at NITTTR Bhopal, Shri Ravi Kumar stated that under NEP 2020, a balance of ethics and technology is essential in education to ensure the holistic development of students.

Ethics and Indian Knowledge Tradition form foundation of education in AI era: Shri Ravi Kumar

- A special program on Indian Knowledge Tradition was organized at NITTTR Bhopal.
- Under NEP 2020, the Indian Knowledge Tradition is being reintegrated into the education system.
- The program emphasized that in the AI era, integration of ethics with technology is essential.

The Cliff News • Bhopal

A special program on "Indian Knowledge Tradition" was organized at the National Institute of Technical Teachers Training and Research (NITTTR), Bhopal, in which teachers, researchers, and experts from various states participated. The chief guest on the occasion was Shri Ravi Kumar, State Organization Minister of Vidya Bharati Rajasthan, who addressed the gathering. In his address, Shri Ravi Kumar said that the National Education Policy (NEP) 2020 has played a significant role in re-establishing Indian thought and the knowledge tradition. He stated that by making the Indian Knowledge Tradition an integral part of the education system, efforts are being made to connect students with their cultural and intellectual heritage. This will not only expand their knowledge but also help in developing moral values among them.

He further said that the Panchatantra is not merely a collection of stories, but an excellent source of life management, leadership skills, practical wisdom, and ethical education. The Indian Knowledge Tradition teaches us the balanced, limited, and responsible use of natural resources, which can play a vital role in addressing today's environmental challenges.

Shri Ravi Kumar also stated that in the present era of rapid development of Artificial Intelligence (AI), the integration of ethics with technology is essential. He emphasized that the Indian Knowledge Tradition provides this ethical foundation, which can guide modern technological advancement towards human welfare.

He also highlighted that the Vedas and Puranas contain indications of several principles and concepts upon which modern science is based today. He stressed the need to study and analyze these ancient scriptures from a scientific perspective so that their knowledge can be utilized for the welfare of humanity.

Presiding over the program, Dr. C.C. Tripathi, Director of NITTTR Bhopal, said that the Indian Knowledge Tradition plays an important role in the effective implementation of NEP 2020. He added that holistic development of students can only be achieved by integrating technical and vocational education with Indian values, cultural perspectives, and ethical conduct. The institute is continuously promoting teaching, training, research, and innovation in this direction.

Dr. P.K. Purohit, Head of the Department of Indian Knowledge Tradition and program coordinator, stated that this tradition is not merely a legacy of the past but a repository of scientific knowledge that remains highly relevant for the present and future.

The vote of thanks was delivered by Dr. Ramendra Singh, while Dr. Somi Chatterjee conducted the proceedings. Teachers and academicians from various states participated and shared their views on the significance of the Indian Knowledge Tradition. The program concluded with a strong message on the integration of education, culture, and technology.



Bhopal: NITTTR and SAC-ISRO Ahmedabad signed an MoU on semiconductor and LTCC technologies. The joint fabrication centre and research collaborations will strengthen India's indigenous space technology and advanced semiconductor capabilities.

From Bhopal to space, indigenous semiconductor technology has given a new flight to self-reliant India

- The agreement between NITTTR Bhopal and SAC-ISRO Ahmedabad will give new direction to semiconductor research.
- The joint LTCC fabrication centre will accelerate the development of indigenous space technologies in India.

The Cliff News • Bhopal

A significant Memorandum of Understanding (MoU) was signed between the National Institute of Technical Teachers Training and Research (NITTTR) and the

Space Applications Centre (SAC-ISRO) to strengthen collaborations in semiconductor and Low Temperature Co-fired Ceramics (LTCC) technologies. The agreement is seen as a major step toward advancing semiconductor research, packaging technologies, and space electronics development in India.

The MoU was signed by Prof. C. C. Tripathi, Director of NITTTR Bhopal, and Shri Soniya S. Sarkar, Director of SAC-ISRO Ahmedabad, in the presence of senior scientists and academicians. Under this partnership, a joint LTCC Multi-Chip Module (MCM) fabrication centre will be established at NITTTR Bhopal. The collaboration will also focus on OSAT/ATMP

processes, high-frequency and high-power semiconductor technologies, and advanced semiconductor packaging solutions. The objective of this initiative is to strengthen India's indigenous technological capabilities and reduce satellite launch timelines. The technologies developed under this partnership are expected to be used in future satellite payloads, thereby boosting space research and innovation. Several experts, including Prof. A. S. Walsey, Dr. P. K. Khanna, Prof. Nishith Dubey, and Dr. Pallavee Bhattacharya, were present at the event. Speakers emphasized that collaboration between industry, academia, and research institutions is essential for the development of emerging technologies.

Ethics are essential alongside AI Ravi Kumar at NITTTR event

► Bhartiya Gyan Parampara can strengthen the NEP, speakers emphasize

Bhopal: A programme on the Bhartiya Gyan Parampara was organised at NITTTR Bhopal, where speakers highlighted the need to integrate India's traditional knowledge systems with modern education and technology. Addressing the gathering, chief guest Shri Ravi Kumar, Prant Sangathan Mantri, Vidya Bharati, Rajasthan, said the National Education Policy (NEP) 2020 has played a pivotal role in restoring Indian knowledge traditions by making them an integral part of the education system.

He noted that universities and higher educational institutions are increasingly introducing courses

based on the Bhartiya Gyan Parampara, enabling students to re-connect with India's rich intellectual and cultural heritage. Describing the Panchatantra as more than a collection of moral stories, he said it offers valuable lessons in leadership, ethics, life management, and practical wisdom. Ravi Kumar stressed that the Bhartiya Gyan Parampara advocates the balanced and responsible use of natural resources, providing meaningful solutions to present-day environmental challenges. Referring to the rapid growth of AI, he said technology must be complemented by ethics, and India's traditional knowledge systems offer a

strong moral foundation for its responsible use. Presiding over the programme, NITTTR Director Dr. C.C. Tripathi said the effective implementation of NEP 2020 depends on integrating technical and vocational education with Indian values and ethical conduct. Dr. P.K. Purohit, Head of the Department of Bhartiya Gyan Parampara, described the tradition as a living repository of scientific knowledge relevant to both the present and the future. The programme concluded with a vote of thanks by Dr. Ramendra Singh, while Dr. Somi Chatterjee conducted the proceedings. Teachers from several states participated.

जनसंपर्क प्रकोष्ठ (संपर्क सरिता)



राजभाषा प्रकोष्ठ



समविश्वविद्यालय - विशिष्ट श्रेणी

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल

(समविश्वविद्यालय - विशिष्ट श्रेणी)

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार